Q10. विश्व को सांस्कृतिक प्रदेशों में बाँटें और किसी दो का विस्तार से वर्णन करें।

→ वैसे विस्तृत क्षेत्र जिसमें निवास करने वाले लोगों में भाषा, धर्म, गुण, रीति-रिवाज, परंपराओं आदि के आधार पर छोटी मोटी विविधता होते हुए भी एक विशिष्ट प्रकार की एकता होती है उन्हें सांस्कृतिक क्षेत्र (CULTURAL REGION) कहा जाता है। एक ही CULTURAL REGION के निवासियों के महत्वपूर्ण गुणों में एक मौलिक एकता देखने को मिलती है। इन्हीं विशेषताओं के आधार पर विश्व को निम्नलिखित CULTURAL REGIONS में बाँटा जाता है—

(i) पाश्चात्य संस्कृति प्रदेश :- इस प्रदेश के अन्तर्गत मुख्यतः पश्चिमी यूरोप के देश आते हैं। लेकिन इन क्षेत्रों के निवासी जहाँ-जहाँ साम्राज्यवादी आकांक्षाओं की पूर्ति हेतु गए वहाँ उन्होंने अपनी संस्कृति का प्रसार किया। इसका प्रसार मुख्यतः तीन क्षेत्रों में हुआ—

(a) भूमध्यसागरीय क्षेत्र :- 19 वीं शताब्दी तक भूमध्य सागर के तटवर्ती क्षेत्र ही पाश्चात्य संस्कृति के केन्द्र थे। इस क्षेत्र की विकसित संस्कृति का प्रभाव सम्पूर्ण विश्व पर पड़ा था।

(b) पश्चिमी यूरोप :- 17 व 18 वीं शताब्दी के मध्य यह क्षेत्र पाश्चात्य सभ्यता-संस्कृति के केन्द्र के रूप में विकसित हुआ। जनतंत्र, शासन व्यवस्था, व्यापार, पूंजीवाद व आधुनिक तकनिक का प्रसार यहीं से सम्पूर्ण विश्व में हुआ।

(c) उत्तरी अमेरीका :- यह विश्व में पाश्चात्य सभ्यता-संस्कृति का नवीन केन्द्र है। आधुनिक विश्व के परिदृश्य में यह क्षेत्र शिक्षा, व्यापार, तकनिक इत्यादि में बहुत उन्नत है।

Scanned with CamScanner

(ii) इस्लामिक संस्कृति प्रदेश :- इस सांस्कृतिक क्षेत्र का विस्तार अफ्रिका में मोरक्को से ले कर पाकिस्तान की पूर्वि सीमा तक तक है। इसकी उत्पत्ति 7 वीं शताब्दी में अरब से हुई। 10 वीं - 13 वीं शादि तक इसका विस्तार विश्व के अन्य क्षेत्रों में हुआ।

(iii) भारतीय सांस्कृतिक प्रदेश :- भारतीय उपमहाद्वीप विश्व का एक मुख्य सांस्कृतिक क्षेत्र है। यहां विश्व की प्राचिनतम संस्कृति विराजमान है जिसमें समय के साथ साथ अनेक उचित परिवर्तन भी आए हैं। विरता, मातृभूमि से प्रेम, सत्य के प्रति आस्था, शांति, बंधुत्व व अहिंसा इस संस्कृति के मूल मंत्र रहे हैं।

(iv) पूर्वि एशिया सांस्कृतिक प्रदेश :- इस सांस्कृतिक प्रदेश के अन्तर्गत मुख्य रूप से चीन, जापान एवं कोरिया की संस्कृति आती है। चीन की संस्कृति आज भी अपने मूल रूप में विद्यमान है तथा सम्पूर्ण क्षेत्र पर इसका प्रभाव पड़ा है।

(v) द. पू. एशिया सांस्कृतिक प्रदेश :- यह प्रदेश कई संस्कृतियों का मिलन स्थल है। इसकी अपनी कोई सांस्कृतिक विरासत नहीं रही है। यहाँ हिन्दु, ईसाई व इस्लाम तीनों धर्मों का प्रभाव पड़ा है। यह प्रदेश आज भी कई ~~संस्कृतियों~~ प्रजातियों एवं भाषाओं में विभाजित है।

(vi) मध्य अफ्रीकन सांस्कृतिक क्षेत्र :- यातायात की कठिनाइयों व विषम जलवायविक परिस्थितियों के कारण इस भाग में सांस्कृतिक पिछड़ापन रहा है। इधर हाल के कुछ वर्षों में यूरोप वासियों के सम्पर्क में आने के कारण यहाँ कई देशों का निर्माण हुआ। यूरोपिय प्रभाव से ही इस क्षेत्र में सांस्कृतिक विकास प्रारंभ हुआ है।

Scanned with CamScanner

(iii) SOCIAL & CULTURAL FACTORS :- नगरों के उद्भव एवं विकास में सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नगरों की उत्पत्ति एवं विकास हेतु उत्तरदायी ऐसे प्रमुख कारक निम्न लिखित हैं—

(a) RELIGION :- विश्व के प्राचिन नगर धार्मिक कारणों से ही बने थे। धार्मिक केन्द्रों का नगरों के रूप में विकसित हो जाना एक स्वभाविक प्रक्रिया है। भारत में वाराणसी, मथुरा, अयोध्या इजरायल में येरुसलम, अरब में मक्का-मदिना आदि नगर धार्मिक महत्व के ही हैं।

(b) TOURISM :- पर्यटक स्थल भी शीघ्र ही नगरों में परिणित हो जाते हैं सरकारी संरक्षण में ऐसे नगरों का शिघ्र ही विकास हो जाता है। भारत में शिमला, मंसूरी, नैनीताल, दार्जिलिंग आदि नगरों का विकास TOURISM के कारण ही हुआ है।

(c) EDUCATION :- शैक्षणिक संस्थानों के आकर्षण के कारण लोग वहाँ जाने लगते हैं तो उस क्षेत्र का विकास नगर के रूप में होते देर नहीं लगती। जैसे - भारत में रुड़की, वाराणसी, ब्रिटेन में कैम्ब्रिज, हार्वर्ड, आक्सफोर्ड इत्यादि सभी नगर इसी कारण स्थापित हुए हैं।

(iv) राजनैतिक कारण :- जो क्षेत्र प्रशासनिक व राजनैतिक क्रिया-कलापों के केन्द्र होते हैं, उनका नगरों के रूप में विकास होते देर नहीं लगती। भारत में दिल्ली, चंडीगढ़, भुवनेश्वर, गाँधीनगर आदि इसी प्रकार के नगर हैं। क्योंकि इनका विकास राजधानी बनने के बाद ही हुआ है।

Scanned with CamScanner